Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 5, Issue 2 – 2020
ISSN: 2581-3501

# कोविड-19 की चुनौतियां, गाँधी दर्शन, समाज और अर्थव्यवस्था

**डॉ0 सतीश कुमार वर्मा[1]**

[1]*सहायक प्राध्यापक, राजनीती विज्ञान विभाग, सरिया कॉलेज, सरिया, गिरिडीह, झारखण्ड।*

## प्रस्तावना

वायरस एक तार है जो आप सबको जोड़ता है, तोड़ता नहीं है। इसलिए यदि आप इसको देशों में, सीमाओं में, समुदायों में या वर्गों में बांटकर देखते हैं तो इससे अपना ही नुकसान होगा। कोरोना वायरस से बड़ा दुश्मन अभी उससे उत्पन्न भय हो गया है। इसने दुनिया भर में सामान्य जीवन को अस्थिर और भ्रमित कर दिया है। इसे देखते हुए गांधी का यह कथन याद आना स्वाभाविक है कि प्राकृतिक कारणों से अधिक लोग चिंता से मर जाते हैं। महामारी के राजनीतिक दुरुपयोग का सर्वप्रथम अनुभव गांधी ने भारत में 1896 में फैले प्लेग के बाद अपने परिवार के साथ दक्षिण अफ्रीका की समुद्री यात्रा के दौरान किया था। यात्री जहाज एस.एस.कौरलैंड जब 18 दिसंबर, 1896 को डरबन बंदरगाह पर पहुंचा तो उसे एक अन्य यात्री जहाज एस.एस.नादेरी के साथ इस आधार पर क्वारंटीन में रखा गया कि जहां से ये जहाज चले हैं, वह बंबई शहर प्लेग से पीड़ित था। पर इसका वास्तविक उद्देश्य नस्लवादियों द्वारा गांधीजी को तंग करना था। जहाज पर ही स्थानीय अखबार नटाल एडवर्टाइजर को दिए साक्षात्कार में गांधीजी ने ब्रिटिश साम्राज्य और उसके उपनिवेशों के विस्तृत सबंधों का प्रश्न उठाते हुए अप्रवासी अधिकारों की बात की और ऐसे दुर्व्यवहार को जन्म देने वाली शक्ति पर आधारित पश्चिमी सभ्यता की निंदा की। गांधी सहित सभी भारतीय यात्रियों को 27 दिन जहाज पर ही रहना पड़ा और 13 जनवरी को जब उतरने की अनुमति दी गई तो गांधीजी को बंदरगाह पर एकत्र हिंसक भीड़ के दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा। मार्च-अप्रैल 1904 में दक्षिण अफ्रीका के जोहानिसबर्ग शहर की कुली बस्ती में अचानक प्लेग फैल गया था। गांधीजी के पास खबर पहुंचाई गई कि आप यहां जल्दी आइए, पूरी बस्ती संकट में है। गांधीजी ने जिस समर्पण और सेवा भाव के साथ कार्य किया उससे गरीब भारतीयों के बीच उनका प्रभाव अच्छा-खासा बढ़ गया। प्लेग के अनुभवों के कुछ वर्ष बाद गांधीजी हिंद स्वराज में आधुनिक सभ्यता के भौतिक और शोषक तत्वों की पहचान करते हैं। उनका मानना था कि भारत को आधुनिक सभ्यता के शहरीकरण और उद्योगवाद को खारिज करना होगा।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved. 

Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 5, Issue 2 – 2020
ISSN: 2581-3501

उनके मुताबिक इस सभ्यता का जन्म तो पश्चिम में हुआ, लेकिन यह भारत में घुसपैठ बढ़ाकर उसकी आर्थिक और सांस्कृतिक पर-निर्भरता को बढ़ा रही थी। गांधी का महामारी से अगला सामना दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने के तुरंत बाद हुआ। वह 1917 में पश्चिमी भारत में फैले प्लेग और उसके संक्रमण की रोकथाम के लिए स्वच्छता पर जोर देते हैं तथा हैजा, मलेरिया और प्लेग से हुई मौतों का उल्लेख करते हुए उन्हें रोक पाने में भारतीयों की असफलता के कारणों पर चर्चा करते हैं। गांधीजी ने खेड़ा के किसानों और अहमदाबाद के श्रमिकों को राहत देने का एक आधार इन जगहों पर प्लेग फैलना भी बताया था। गुजरात के अहमदाबाद में मई 1915 को उन्होंने कोचरब नामक स्थान पर अपने पहले सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की थी परंतु 1917 में कोचरब में भी प्लेग का प्रकोप फैला। आत्मकथा में गांधी लिखते हैं कि स्वच्छता के नियमों का बहुत सावधानी से पालन करने पर भी आसपास की अस्वच्छता से कोचरब आश्रम को बचा पाना असंभव था। इसलिए आश्रम के बालक उस प्लेगग्रस्त बस्ती में सुरक्षित नहीं समझे जा सकते थे। ऐसे में सत्याग्रह आश्रम को साबरमती नदी के तट के पास एकांत जगह पर स्थानांतरित कर दिया गया। सन 1918 में महात्मा गांधी बहुत बीमार पड़े। तब वह पेचिस की बीमारी का शिकार होकर मरते-मरते बचे थे, जिसका उल्लेख वह बार-बार अपनी आत्मकथा और संपूर्ण गांधी वाड्मय, खंड 17 में शामिल अपने पत्रों में करते हैं। आम धारणा के विपरीत उन्हें तब पूरी दुनिया में विश्व युद्ध से ज्यादा तबाही मचाने वाली स्पैनिश फ्लू की महामारी ने नहीं पकड़ा था। हां उनका परिवार जरूर उससे प्रभावित हुआ था। गांधीजी के बड़े बेटे हरिलाल की पत्नी गुलाब और उनके बड़े बेटे शांति की मौत स्पैनिश फ्लू से ही हुई थी। बहू और पोते की मौत के बाद कस्तूरबा अपने बाकी तीन पोते-पोतियों को लेकर आश्रम आ गईं और उनका वहीं पालन-पोषण किया।

ऊपर किए गए वर्णन के संदर्भ में यदि आज हम कोरोना महामारी के संकट का मूल्यांकन करें तो आधुनिक भूमंडलीकरण और उपभोक्तावादी जीवन शैली के स्वछंदतावाद ने जरूर कहीं न कहीं मानवीय मूल्यों को प्रभावित किया है। आज जबकि महामारी के कारणों, उससे उत्पन्न अव्यवस्थाओं, आवश्यक दवाओं तथा चिकित्सा उपकरणों को लेकर आरोप-प्रत्यारोप का दौर चल रहा है और भूमंडलीकरण का सपना चूर-चूर हो चुका है, तब हमें नवीनतम तथ्यों की रोशनी में महात्मा गांधी की ग्राम स्वराज की अवधारणा की पुन: व्याख्या करने की जरूरत है। जब महानगरीय समाज ने प्रवासी श्रमिकों को लॉकडाउन के दौर में निस्सहाय

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved. 

छोड़ दिया और उनका पलायन वापस गांवों की ओर हो रहा है तो गांधी का कथन याद आता है कि भारत की आत्मा अपने गांवों में रहती है। गांधी के लिए गांव सामाजिक संगठन की मूल इकाई था। इसलिए उन्होंने गांवों को अपनी महत्वपूर्ण आवश्यकताओं के मामलों में आत्मनिर्भर बनाने की जरूरत बताई। आज पूरी दुनिया बुनियादी वस्तुओं और आवश्यक चिकित्सा तकनीक के लिए संघर्ष कर रही है। यूरोप इस महामारी से तो पीड़ित है ही, चिकित्सा उपकरणों के लिए भी अमेरिका और चीन पर निर्भर है। इस संकट ने हमें एक बड़ा महत्वपूर्ण सबक यह दिया है कि हर देश के पास सर्वप्रथम अपने अस्तित्व के लिए जरूरी बुनियादी सुविधाएं होनी ही चाहिए। शायद तभी महात्मा गांधी ने कहा था, हर किसी की जरूरत के लिए दुनिया में पर्याप्त है। लेकिन किसी एक के भी लालच के लिए पर्याप्त नहीं है। कोविड-19 की वजह से लागू लॉकडाउन में छूट या ढील और प्रवासी श्रमिकों की घर वापसी की पृष्ठभूमि में शुक्रवार को भारत सरकार ने कहा कि हमें कोरोना वायरस के साथ जीना सीखना होगा और ऐहतियाती कदमों को अपनी जीवन शैली का हिस्सा बनाना होगा। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय में संयुक्त सचिव लव अग्रवाल ने कहा कि देश में कोविड-19 मरीजों की संख्या दोगुने होने का समय पहले के मुकाबले कम हुआ है। उन्होंने बताया कि दो दिन पहले तक औसतन 12 दिन में संक्रमित लोगों की संख्या दोगुनी हो रही थी लेकिन आज यह औसत 10 दिन का है। लेकिन साथ ही अग्रवाल ने इस बात पर जोर दिया कि इन दिनों 'क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए' का यदि कड़ाई से पालन किया गया, तो कोविड-19 के मामलों को चरम पर पहुंचने से रोका जा सकता है। अग्रवाल ने कहा, 'ऐसे में जब हम लॉकडाउन में छूट या ढील की बात कर रहे हैं और प्रवासी श्रमिक अपने-अपने घर लौट रहे हैं, तो हमारे सामने एक बड़ी चुनौती पैदा हो रही है और हमें अब कोरोना वायरस के साथ रहना सीखना होगा। 'ग्लोबलाईज़ेशन या वैश्वीकरण का अगर हम निष्पक्ष तरीके से मौजूदा समय में आकलन करें तो पायेंगे कि-कोविड-19 महामारी के दुनिया में आने और फिर छा जाने से बहुत पहले ही-वैश्वीकरण की उदार व्यवस्था न सिर्फ़ धीरे-धीरे कमज़ोर पड़ रही थी बल्कि अपने स्थान से ख़िसक रही थी। और इसका बीज बोया था दुनिया में महाशक्ति के तौर पर अपना वर्चस्व जमाने की कोशिश में लगे अमेरिका और चीन के आपसी विवाद ने। सच ये है कि तक़रीबन दुनिया के हर देश में लागू हुए लॉकडाउन की इस प्रक्रिया ने उसी ग़ैर-वैश्विकरण के क्रम को मज़बूत करने का काम किया है। इसके बावजूद दूसरा और बड़ा सच ये है कि कोई भी देश, समाज, वर्ग और समूह इस लड़ाई को अकेले

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved. 

Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 5, Issue 2 – 2020
ISSN: 2581-3501

नहीं जीत सकता है। कोविड-19 नाम की इस आफ़त ने पूरी दुनिया को एक ऐसे अनदेखे-अंजाने समुद्र में फेंक दिया है, जिससे सुरक्षित बाहर निकलने के लिए हम सभी को तैराक़ी की क़ला सीखनी होगी।

कोविड-19 के हमले ने दुनिया के विकसित और विकासशील सभी देशों की कमज़ोर और अपर्याप्त जन-स्वास्थ्य सेवाओं की पोल खोलकर रख दी है। ये बिल्कुल वैसा ही है जैसे-नदी के तेज़ बहाव को पार करते हुए हमें उसके तल पर जमे पत्थरों से मिलने वाली चोट का अंदाज़ा नहीं होता-हम सब इस वक्त़ बस इस तेज़ बहाव वाली नदी से ज़िंदा बच निकलने का रास्ता ही ढूंढ रहे हैं। न तो ये महामारी इतनी जल्दी ख़त्म होने वाली है और न ही लॉकडाउन इसका असल समाधान है। इस तालाबंदी से हमें सिर्फ़ वो मोहलत मिल रही है-जिसका इस्तेमाल हम अपनी ज़िंदगियों को बचाने और संवारने में लगा सकते हैं। लेकिन ये भी सच है कि मनुष्य कितना भी सोच-विचार करके इस विपदा से लड़ने की कोशिश कर ले-वो कुछ अनदेखे और अप्रत्याशित ख़तरों से पूरी तरह मुक्त नहीं हो सकता है। इसलिए इस समय जो चीज़ सबसे ज़्यादा मानव जीवन की मदद कर सकता है वो है-सूचनाओं के आदान-प्रदान में पारदर्शिता, जो सरकार के विभिन्न अंगों से लेकर उसके नागरिकों तक, सभी पर लागू होता है। सच ये है कि एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाने के लिए हम सब के पास बाद में बहुत समय होगा-लेकिन इस वक्त़ जो ज़्यादा ज़रूरी और अहम् है वो ये कि हम सब मिलकर-एक साथ इस विपदा का सामना करें। कोरोना वायरस के ख़तरे ने दुनिया के तमाम राष्ट्रों की सभी आधुनिक सीमाएं एवं संप्रभुताओं की हदों को पार कर दिया है। दुनिया जिस तरह के ख़तरों से निपटने के लिए अपने हथियारों के ज़ख़ीरे को तैयार कर रही थी, वह सबके-सब इस कोरोना वायरस से आगे धरे के धरे रह गए। इस नई किस्म के ख़तरे से निपटने के लिए इज़रायल की मोसाद एजेंसी भी वेंटिलेटर ढूंढ रही है। राष्ट्रीय सुरक्षा के निर्धारण में जहां सैन्य ताक़त अपनी प्रमुख भूमिका निभाती थी, वो आज इस इस महामारी के सामने विवश दिखाई देता है। इस लेख़ के माध्यम से हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि क्या ट्रंप का डब्यूएचओ को फंडिंग रोकना घरेलू राजनीति से प्रेरित है, राष्ट्रों को अपने रक्षा बजट और स्वास्थ्य बजट में किस तरह का संतुलन बनाकर चलना चाहिए, भारत के सामने सबसे बड़ी समस्या क्या है? इस वैश्विक महामारी को ख़त्म करने के लिए दुनिया के देशों को कौन-सी नीतियां अपनानी चाहिए? आज के समय में अमेरिका डब्ल्यूएचओ को 15

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved. 

प्रतिशत की फंडिंग करता था जिसपर अमेरिकी सरकार ने रोक लगा दी है। ट्रंप के इस कदम को रूस ने स्वार्थ से भरा हुआ बताया, वहीं न्यूजीलैंड की सरकार ने कहा ऐसे समय में हम तो समर्थन करते रहेंगे और ऑस्ट्रेलिया कह रहा है कि ऐसा पहली बार नहीं हैं कि डब्ल्यूएचओ ग़लतियां कर रहा है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि आप इसकी फंडिंग को रोक दे। हालांकि, अमेरिका के इस कदम को हां या ना में कहना थोड़ा मुश्किल होगा इसलिए इसको इस तरह से समझने की कोशिश करते हैं।

इस महामारी ने दुनिया को यह सबक़ सिखा दिया है कि जिस तरह के ख़तरों से वो ख़ुद को तैयार कर रहे थे वह काफी नहीं। ऐसे में दुनिया के देशों को सिर्फ बड़े-बड़े युद्धों या विश्व युद्धों के लिए ही खुद को तैयार करना ही पर्याप्त नहीं, इस तरह के गैर-पारंपरिक ख़तरों से निपटने के लिए एक सामूहिक साझा तंत्र विकसित करने की जरूरत है। ये घटना अब उन्हें इस बात पर सोचने पर मजबूर करेगा कि वो अपने स्वास्थ्य क्षेत्र में भी बजट को बढ़ाएं। ऐसा नहीं है कि दुनिया इस तरह के ख़तरों से अनभिज्ञ थी। पहले भी स्पेनिश फ्लू या सार्स जैसी कई महामारियां दुनिया ने देखी हैं, लेकिन सियासत की राजनीति चलती रही। यह जो दौर चल रहा है उसमें हर देश अपने स्वास्थ्य बजट में जो कुछ भी झोंकना हैं वो झोकेगा, इस भंवर से निकलने के लिए। जैसे भी हो जहां से भी हो जिस तरह से हो टेस्टिंग किट मंगवाए जाएं, इसीलिए भले ही आप चीन को कितना भी कोसे मगर आप टेस्टिंग किट चीन से ही मंगाते हैं, चाहे वो अमेरिका हो या यूरोप के देश हो या भारत हो। अभी तत्काल में इससे निपटने के रास्ते अपनाने चाहिए फिर बाद में दुनिया के देशों को मिलकर के इसके लिए एक व्यापक रणनीति तैयार करनी चाहिए। उसके बाद सबको मिलकर ये सोचना होगा कि भविष्य में इस तरह के ख़तरों का स्वरूप क्या होगा।

आज भारत के सामने जो सबसे बड़ी समस्या आ रही है वो है, वो हमारी लचर हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर की है, जो बहुत ही लचर अवस्था में है। इसे सशक्त करने की जरूरत है। इसके लिए निवेश करना पड़ेगा। भले ही इसके कोई तात्कालिक लाभ नहीं मिलते हों लेकिन इसके जो दूरगामी परिणाम है वो सबसे ज़रुरी है।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved. 

## निष्कर्ष

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि आज जिस तरीके से भारत ही नहीं पूरा विश्व कोविड-19 की चुनौतियों से जूझ रहा है इससे निपटने के लिए गांधी का दर्शन यह हम भूमिका अदा कर सकता है। गांधी का ग्राम स्वराज, गृह उद्योग पर जोर, आर्थिक विकेंद्रीकरण आदि ऐसे गांधी के सिद्धांत हैं जिसे अपना करके इस चुनौतियों का सामना किया जा सकता है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सिंह, महेश प्रसाद (2010), "गांधी के सपनों का भारत" प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. वाजपेई, ए.डी.एन और शुक्ल (2009) "गांधी का आर्थिक चिंतन" विश्व भारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
3. पाठक, विनीता (2002) "गांधी दर्शन के व्यष्टि, समष्टि और निराजी व्यवस्था का स्वरूप" मिश्रा ट्रेडिंग कंपनी, वाराणसी।
4. रोलां, रोमां (2018) "महात्मा गांधी: जीवन और दर्शन" लोकभारती पेपर बैक्स, इलाहाबाद।
5. धर्माधिकारी, दादा (2002) "समग्र सर्वोदय दर्शन" सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी।
6. बरनवाल, वीरेंद्र कुमार (2010) "हिंद स्वराज नव सभ्यता विमर्श", राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
7. गांधी, मोहन दास (2014) "हिंद स्वराज" पिलग्रिम पब्लिशिंग, दिल्ली।
8. गांधी एम। के (2011) "ग्राम स्वराज" प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved. 